देव पूजा विधि Part-13 लक्ष्मी-पूजन

जगदानन्द झा 1:34 am कोई टिप्पणी नहीं

आचमन प्राणायाम करके- देशकालौ सङ्कीत्र्य.. स्थिरलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं सर्वारिष्टिनिवृत्तिपूर्वकसर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं व्यापारे लाभार्थं च गणपतिनवग्रह- कलशादिपूजनपूर्वकं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-लेखनी-कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये कहकर जल छोड़े। पý◌ात् गणपति, कलश और नवग्रहादि का पूजन करके महालक्ष्मी का पूजन करें।

ध्यान-ॐ या सा पद्मासनस्थाविपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्य- रूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्ल्ययुक्ता।।

आवाहन-ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।। दुर्गायै नमः, आवाहयामि।

आसन-ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।। आसनं समर्पयामि।

पाद्य- ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते।। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य- ॐ अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्।
अघ्र्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। अघ्र्यं समर्पयामि।

आचमन-ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिब्र्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्।। आचमनं समर्पयामि।

स्नान-ॐ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि! सलिलैý सुगन्धिभिः।। स्नानं समर्पयामि।

(दुग्ध, दधि, घृत, मधु, तथा शर्करास्नान विधि शालग्राम पूजन के अनुसार करायें।)

पञ्चामृतस्नान-ॐ पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम्।
गृहाणविश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले!।। पंचामृतस्नानं समर्प0।

शुद्धोदकस्नान-ॐ तोयं तव महादेवि! कर्पूरागरुवासितम्।
तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। शुद्धोदकस्नानं सम0।

वस्त्र-ॐ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।

Search

Popular Tags Blog Archives

लोकप्रिय पोस्ट

देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन
इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्रायः प्रत्येक संस्कार , व्रतोद्यापन , हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन क...

संस्कृत कैसे सीखें
इस ब्लॉग में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश एवं अन्य विविध देवी देवताओं के स्तोत्रों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। संस्क...

तर्पण विधि
प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर मुँह कर बायें और दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री (पैंती) धारण करें। यज्ञोपवीत को सव्य कर लें। त...

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अच्सन्धि-प्रकरणम्)
अथ अच्सन्धिः If you cannot see the audio controls, your browser does not suppo...

दीयमानं मया देवि! गृहाण जगदम्बिके!।। वस्त्रं समर्पयामि।
उपवस्त्र-ॐ कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि!।। उपवस्त्रं समर्पयामि।
मधुपर्क-ॐ कपिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्।
स्वर्णपात्र स्थितं देवि! मधुपर्कं गृहाण भोः।। मधुपर्कं समर्पयामि।
आभूषण-ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे!।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते!।। आभूषणं समर्पयामि।
गन्ध-ॐ श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम्।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले!।। गन्धं समर्पयामि।
रक्तचंदन-ॐ रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्।। रक्तचंदनं समर्पयामि।
सिन्दूर-ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णञ्च सिन्दूरतिलकप्रिये!।
भक्त्या दत्तं मया देवि! सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। सिन्दूरं समर्पयामि।
कुङ्कुमं-ॐ कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम्।
अखण्ड कामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्।। कुंकुमं समर्पयामि।
अक्षत-ॐ अक्षतान्निर्मलाछुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान् महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम्।। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्प- ॐ मन्दारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा।
मरुवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः।। पुष्पाणि समर्पयामि।
पुष्पमाला-ॐ पद्मशङ्खजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि!।। पुष्पमाल्यां सम0।
दूर्वा- ॐविष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम्।
क्षीरसागरसम्भूते! दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा।। दुर्वां समर्पयामि।
सुगन्धतैल-ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि ! दयानिधे !।
सर्वलोकस्य जननि ! ददामि स्नेहमुत्तमम्।। सुगन्धतैलं समर्पयामि।
अथाङ्पूजा।
ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पूजयामि। ॐ कमलायै नमः कटिं (कमर) पूजयामि। ॐ कात्यायिन्यै नमः नाभिं (नाभि) पूजयामि। ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि। ॐविश्ववल्लभायै नमः वक्षस्थलं पूजयामि। ॐ कमलवासिन्यै नमः भुजौ (दोनों भुजायें) पूजयामि। ॐ पद्मकमलायै नमः मुखं (मुख) पूजयामि। ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः नैत्रात्रायं (तीनों नेत्रा) पूजयामि। ॐ श्रियै नमः शिरः (मस्तक) पूजयामि। अंग पूजा समाप्त।
पूर्वादिक्रम से आठों दिशाओं में अष्टसिद्धि की पूजा करें-ॐ अणिम्ने नमः। ॐ महिम्ने नमः। ॐ गरिम्णे नमः। ॐ लघिम्ने नमः। ॐ प्राप्त्यै नमः। ॐ प्राकाम्यै नमः। ॐ ईशितायै नमः। ॐ वशितायै नमः।। इति अष्टसिद्धिपूजन।
उसी प्रकार पूर्वादिक्रम से अष्ट लक्ष्मी पूजन ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः। ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः। ॐ कामलक्ष्म्यै नमः। ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ भौगलक्ष्म्यै नमः। ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।। इति अष्टलक्ष्मीपूजन।
धूप-ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। इति अष्टलक्ष्मीपूजन।
दीप- ॐ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्रि।। दीपं दर्शयामि।
नैवेद्य- ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।
नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये पानीयं जल समर्पयामि।
ऋतुफल-ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रौलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।। ऋतुफलं समर्पयामि।
आचमन-ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
आचम्यतामिदं देवि प्रसीद त्वं महेश्वरि!।। आचमनीयं जलं सम0।
अखण्डऋतुफल-ॐ इदं फलं मयाऽनीतं सरसं च निवेदितम्।
गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम्।। अखण्डऋतुफलं सम0।
ताम्बूलपूगीफल-ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम्।
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ताम्बूलपूगीफलं सम0।
दक्षिणा-ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। द्रव्यदक्षिणां सम0।
प्रार्थना
ॐ सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तवपादपङ्कजम्। परावरं पातु वरं सुमङ्लं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये।।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनि!।

ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

खोज

लेखानुक्रमणी

सुपूजिता प्रसन्नस्यान्महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।

Share:

जगदानन्द झा
लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता,निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुडा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण- प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते है। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

← नई पोस्ट मुख्यपृष्ठ पुरानी पोस्ट →

कोई टिप्पणी नहीं:

एक टिप्पणी भेजें

SANSKRITSARJANA वर्ष 2 अंक-1

मेरे बारे में

जगदानन्द झा

मेरा पूरा प्रोफ़ाइल देखें

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 1

समर्थक एवं मित्र

Followers (277) Next

Follow

RECENT POSTS

अव्यवस्थित सूची

लेखाभिज्ञानम्

बार जानकारी के अभाव में लोग गलत सामग्री पर भरोसा कर लेते हैं। ई-सामग्री के महासमुद्र में इच्छित व प्रामाणिक सामग्री को खोजना भी एक जटिल कार्य है।
इन परिस्थितियों में मैं आपके साथ हूँ। आपको मैं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराने के साथ आपकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए वचनबद्ध हूँ। प्रत्येक लेख के अंत में **मुझे सूचित करें** बटन दिया गया है। यहाँ पर क्लिक करना नहीं भूलें।